# उसके पुत्र के स्वरूप में

2 पतरस 1:1-11

फ्रैंकलिन के नोट्स

2 पतरस 1:1 शमौन पतरस की ओर से, जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, उन लोगों के नाम जिन्होंने **हमारे परमेश्वर** और **उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता द्वारा** हमारे समान बहुमूल्य **विश्वास प्राप्त किया** है।

- हमने विश्वास का प्राप्त या ग्रहण किया है। यह हम तक पहुंचा है, इसे दान स्वरूप दिया गया है।
- रोमियों 12:3 परमेश्वर ने **हर एक को विश्वास परिमाण** के अनुसार बाँट दिया है
- इब्रानियों 12:2 ... **और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु**
- 1 कुरिन्थियों 4:7 और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं **पाया?**

  (इस अध्ययन के अंत में ऐसे और भी पद दिए गए हैं जो बताते हैं कि विश्वास एक दान है)
- किस प्रकार का विश्वास? हमारे समान -> बहुमूल्य और वैसा ही महत्व और अधिकार का जैसा पतरस और अन्य प्रेरितों का था।
- क्यों और किस आधार पर इसे हमें दिया गया? **पूर्ण रूप से अनुग्रह के द्वारा**, हमारे किसी भी कार्य या प्रयासों से नहीं पर पूर्ण रूप से **हमारे परमेश्वर** और **उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता** और लहू के **द्वारा**।

**पद 2** (1) परमेश्वर की और हमारे प्रभु यीशु की **पहचान** के द्वारा **अनुग्रह** और **शान्ति** तुम में **बहुतायत से बढ़ती जाए**।

- जब हम **परमेश्वर की** और हमारे प्रभु यीशु की **पहचान** में बढ़ते हैं, अनुग्रह और शांति भी **बहुतायत से बढ़ती** है।

  बढ़ना और परिपक्व होना–> यह आप पर निर्भर है ...
- अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा **काम करनेवाला** ठहराने का **प्रयत्न कर**, जो लज्जित होने न पाए, और जो **सत्य के वचन** को **ठीक रीति से** काम में लाता हो। 2 तीमुथियुस 2:15

**पद 3** क्योंकि **उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य** ने **सब कुछ** जो **जीवन** और **भक्ति** से सम्बन्ध रखता है, **हमें** (2) **उसी की पहचान** के द्वारा **दिया है**, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्‌गुण के अनुसार **बुलाया है**।

- निराला, अद्‌भुत। परन्तु हम सब कुछ कैसे प्राप्त करेंगे???
- **सब कुछ** जो **जीवन** और **भक्ति** से सम्बन्ध रखता है, वह **उसी की पहचान** के माध्यम से आता है।
- हमें जीवन और भक्ति का यह अद्‌भुत और महिमामय वरदान **दिया गया है।** हम सब इन बातों को खोजेंगे, उनमें रहेंगे और आनंदित होंगे और **उसी की पहचान** में बढ़ते जाएंगे।
  जैसे किसी भी भेंट के साथ होता है, **सबसे पहले**, आपको यह जानना ज़रूरी होता है कि आपको भेंट दी गई है। और फिर **दूसरी बात**, उसे इस्तेमाल करने और उसका लाभ लेने के लिए आपको उसे पैकेट से निकालकर इस्तेमाल करना चाहिए।
- **सब कुछ...हमें...दिया है** -> **विश्वास भी।** यह अनुग्रह है जो अपनी चरम सीमा पर है

  इफिसियों 2:8 क्योंकि **विश्वास के द्वारा अनुग्रह** ही से तुम्हारा **उद्धार** हुआ है; और यह (अर्थात विश्वास) तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का **दान** है,

**पद 4** जिनके द्वारा (महिमा और सद्‌गुण) **उसने हमें बहुमूल्य** और **बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं** (क्यों?) : ताकि **इनके द्वारा तुम** उस सड़ाहट से **छूटकर**, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, **ईश्वरीय स्वभाव** के **समभागी** हो जाओ।

- केवल उसकी **बहुमूल्य** और **बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाओं** के द्वारा ही हम **ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो** सकते हैं तथा सड़ाहट से **छूट** सकते हैं।
- यह उसका लक्ष्य है। और यही हमारा भी होना चाहिए -> "जैसा आरम्भ में था"
- सब बड़ी और सबसे ज़रूरी **प्रतिज्ञा**, प्रेरितों के काम 1:4-8 : उसने उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, "यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस **प्रतिज्ञा** के पूरे होने की बाट जोहते रहो...(5) ... तुम **पवित्र आत्मा** से बपतिस्मा **पाओगे।**" (8) परन्तु जब **पवित्र आत्मा तुम पर आएगा** तब तुम **सामर्थ्य पाओगे**; और ... मेरे गवाह **होगे।**"
- इफिसियों 3:16-17 **वह अपनी महिमा के धन** के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम **उसके आत्मा** से अपने भीतरी मनुष्यत्व में **सामर्थ्य पाकर बलवन्त** होते जाओ; और विश्वास के द्वारा **मसीह** (उसका ईश्वरीय स्वभाव) **तुम्हारे हृदय में बसे**
- और केवल **पवित्र आत्मा** के **सामर्थ्य** के द्वारा ही हम **बलवंत** होंगे और उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, पूर्ण रूप से उसी के **ईश्वरीय स्वभाव** से भर जाएँगे।

- रोमियों 8:29 क्योंकि **जिन्हें** उसने पहले से जान लिया है उन्हें **पहले से ठहराया** भी है कि **उसके पुत्र के स्वरूप में हों**। **ईश्वरीय स्वभाव** से **भरा**। एक सरल मार्ग -> आज्ञाकारिता के द्वारा। या कठिन मार्ग -> ताड़ना के द्वारा।
- कुलुस्सियों 1:9-12 इसी लिये जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना और विनती करना नहीं छोड़ते कि **तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो जाओ, ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो**, और **वह** सब प्रकार से **प्रसन्न हो** (कैसे?), और (1) तुम में हर प्रकार के भले कामों का **फल लगे**, और (2) **तुम परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ** (जिससे हम), **उसकी महिमा की शक्ति** के अनुसार **सब प्रकार की सामर्थ्य** से बलवन्त होते जाओ, यहाँ तक कि आनन्द के साथ (3) हर प्रकार से **धीरज** और (4) सहनशीलता दिखा सको, और (5) पिता का धन्यवाद **आनन्द से** करते रहो, जिसने **हमें इस योग्य बनाया** कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सहभागी हों।

## अद्भुत !

## उसने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें दिया है

### हमारे पास कोई बहाना नहीं है।

ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो कि कोई परमेश्वर के **अनुग्रह** से **वंचित** रह जाए, इब्रानियों 12:15

### हम कितना वंचित रह जाते हैं?

**पद 5 इसी कारण** (उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है) तुम **सब प्रकार का यत्न करके** (दृढ़, पूरी शक्ति से प्रयास) **अपने विश्वास** पर **सद्गुण**, और सद्गुण पर (3) समझ ... **बढ़ाते जाओ**।

- जो **तुम्हें सामर्थ्य देता** है उसमें **तुम सब कुछ** कर **सकते हो**। फिलिप्पियों 4:13
- फिलिप्पियों 2:12-13 इसलिये हे मेरे प्रियो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, ... डरते और काँपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य **पूरा करते जाओ** (हमारी ज़िम्मेदारी); क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है। फिलिप्पियों 1:6 मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक **पूरा करेगा**।
- वह अपने बच्चों के जीवनों को **सद्गुण** पथ पर ले जाकर अपने **पुत्र के स्वरूप में** करने के कार्य से कभी हार नहीं मानता।

पद 5 जारी : ... सद्गुण पर (2) समझ

- क्योंकि : जो लोग अपने परमेश्वर का ज्ञान रखेंगे, वे हियाव बाँधकर बड़े **काम करेंगे।** दानिय्येल 11:32 … और **सद्गुण** में चलेंगे।

**पद 6** और समझ पर **संयम**, और संयम पर **धीरज**, और धीरज पर **भक्ति**, 7 और भक्ति पर भाईचारे की **प्रीति** और भाईचारे की प्रीति पर **प्रेम** बढ़ाते जाओ।

(1) और समझ पर **संयम**

- **असंयम** के कारण शैतान बड़ी आसानी से आपको परख सकता है (1 कुरिन्थियों7:5)। और जब वह ऐसा करता है तो **परमेश्वर का हमारा ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है** और हम शैतान को वैसा प्रत्युत्तर दे पाते हैं जैसा यीशु ने अपनी परीक्षा के समय दिया था। **हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है. . .** मत्ती 4:10 **हमें वचन को जानना चाहिए।**
- शैतान कठिन परिश्रम करता है कि वह हमारे क्रोध/वासना/आदतों द्वारा हमारी ऊंगली को, और फिर हमारे पैरों को और फिर हमें जकड़कर अपने अधिकार में ले ले ले।

  परन्तु यह जानें :

  1 कुरिन्थियों 10:13 तुम किसी ऐसी **परीक्षा** में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर **सच्चा है** और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ **निकास भी करेगा** कि तुम **सह सको।**
- **संयम** आत्मा का फल है, गलातियों 5:23। हमारे जीवन में पवित्र आत्मा की कितनी अगुवाई है इस बात से पता चलता है कि हममें कितना **संयम** है।
- पर यह स्मरण रख कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएँगे। क्योंकि मनुष्य … **असंयमी**… होंगे। वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे; **पवित्र आत्मा** 2 तीमुथियुस 3:1-5

(2) इसलिए : अपने संयम पर **धीरज** बढ़ाएं

- क्योंकि आत्म-संयम पाने के लिए **धीरज** बहुत ज़रूरी है। **यह आसान नहीं है** और उस सड़ाहट से छूटने के लिए, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, **आत्म-संयम** पहला और सबसे महत्वपूर्ण आत्मिक युद्ध है जिसे हमें **लड़ना** है। युद्ध कठिन और भयानक होगा।

- क्योंकि : जैसा पौलुस ने कहा : **पाप** मुझ में बसा हुआ है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती। **इच्छा तो मुझ में है,** परन्तु भले काम **मुझ से बन नहीं पड़ते**। तब मैं यह सिद्धान्त पाता हूँ कि यद्यपि मैं भलाई करना चाहता हूं, **बुराई मुझ में है**। रोमियों 7:17-21

क्योंकि **पाप** और **बुराई** हमारे भीतर है, "उस दुष्ट" के पास अवसर है। इफिसियों 4:27

जितना अधिक हम पाप में लिप्त होते हैं, उतना अधिक हम बुराई को आने देते हैं।

तो हम कैसे इस युद्ध को लड़ें और विजय पाएँ?

- गलातियों 5:17: क्योंकि शरीर आत्मा के **विरुद्ध** लालसा करता है और आत्मा शरीर के **विरुद्ध**। इन दोनों का आपस में **विरोध** है, निरंतर एक दूसरे से **लड़ते** रहते हैं। **इसी कारण तुम जो करना चाहते हो, नहीं कर पाते।**

  उदाहरण : एक बुरा कुत्ता और एक अच्छा कुत्ता लड़ रहे हैं। जिसको भी आप खिलाएंगे वह मजबूत होगा और जिसको भी आप भूखा रखेंगे वह कमज़ोर होगा। उपवास रखने से आपको बुरे को कमज़ोर करने में और अच्छे को मजबूत करने में सहायता मिलेगी।

- **हर एक** पहलवान **सब प्रकार का संयम** करता है; वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं जो मुरझाने का नहीं। **मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ।**

  1 कुरिन्थियों 9:25-27

- क्या मेरी देह मेरे वश में है?? या फिर मैं अपनी देह के वश में हूँ??

- हम किसी खेल में भाग नहीं ले रहे। यह एक गंभीर **युद्ध** है! शत्रु मारने, चोरी करने और नाश करने के लिए आता है।

- यीशु ने इफिसुस की कलीसिया की प्रशंसा की : तू **धीरज धरता** है, और मेरे नाम के लिये **दु:ख** उठाते उठाते थका नहीं। प्रकाशितवाक्य 2:3

- याकूब हमें बताता है : 1:2-4 हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो (चोटिल होना/किसी ने आपके साथ कुछ गलत किया), तो इसको पूरे **आनन्द की बात समझो**, यह जानकर कि तुम्हारे **विश्वास के परखे**

जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम (आज्ञाकारिता के द्वारा) करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे।

**आनन्द की बात समझो।** यीशु ने ऐसा ही समझा। .

- इब्रानियों 12:2-3 . . . और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने **उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था**, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके **क्रूस का दुःख सहा**, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा। इसलिये **उस पर ध्यान करो**, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना विरोध **सह लिया कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो**।

  जंगल में इस्राएलियों के समान—अपनी कष्ट और क्लेशों में कुड़कुड़ाते और बड़बड़ाते हुए—पहाड़ के चारों ओर फिर से चक्कर लगाते हुए। और फिर उनका प्रतिज्ञात देश में जाना— "हम यह युद्ध नहीं जीत सकते।" उस पीढ़ी ने स्वयं की प्रतिज्ञाओं का न तो कभी लाभ उठाया और न कभी उन्हें अनुभव किया।

- **और पौलुस हमें बताता है।** रोमियों 5:3-5 हम **क्लेशों में भी घमण्ड करें**, यह जानकर कि **क्लेश से धीरज**, और धीरज से **खरा निकलना** उत्पन्न होता है, (2 पतरस 1:4) . . . ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, **ईश्वरीय स्वभाव** (उसके खरे चरित्र में) के **समभागी** हो जाओ।

- यूहन्ना 16:33 संसार में **तुम्हें क्लेश होता है**, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।"

- **पतरस हमें बताता है :** 1 पतरस 2:21-24 और तुम **इसी के लिये बुलाए** भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये **दुःख उठाकर** तुम्हें एक **आदर्श** दे गया है कि तुम भी **उसके पद-चिह्नों पर चलो**। न तो उसने पाप किया और न उसके मुँह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और **दुःख उठाकर** किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था।

- इब्रानियों 5:8 पुत्र होने पर भी उसने **दुःख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी**, … तिरस्कार, अपमान, पीड़ा, मार, क्रूस पर चढ़ाया जाना, इन सब से होकर जाने पर भी उसने कोई पाप नहीं किया।

  उसमें न तो कोई कपट था और न ही छल। उसने केवल सच कहा।
  जबकि उसे झूठा कहकर अपमानित किया गया, पर उसने पलटकर उनका अपमान या उन्हें कुछ बुरा नहीं कहा।
  अपने पूरे जीवन में और क्रूस पर **दुःख उठाते** समय भी उसने किसी को कोई धमकी नहीं दी, बल्कि वह अपने आपको उसके हाथों में सौंपता था जो सच्चा न्यायी है।

- यह **ईश्वरीय स्वभाव** है।
- 2 कुरिन्थियों 4:17-18 क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा **क्लेश** (दुःख उठाने का) **हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है;** और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं।

(3) और धीरज पर **भक्ति**,

- (पद 4) उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी **प्रतिज्ञाएँ** दी हैं (क्यों): ताकि **इनके द्वारा** तुम ... **ईश्वरीय स्वभाव** के समभागी हो जाओ।
- और : (पद 3) क्योंकि **उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य** ने **सब कुछ** जो **जीवन** और **भक्ति** से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है (**आपके भीतर ईश्वरीय स्वभाव है**), और हमें (पद 5) **प्रयत्नशील होकर सद्गुण बढ़ाते जाना है।**
- उसने हमें **पहले से ठहराया** भी है कि **उसके पुत्र के स्वरूप में हों। भक्ति!**
- अतः हे प्रियो, जब कि ये **प्रतिज्ञाएँ** हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता **से शुद्ध करें**, और परमेश्वर का भय रखते हुए **पवित्रता को सिद्ध** करें। 2 कुरिन्थियों 7:1
- बड़ा सवाल यह है कि हम **कैसे सद्गुण बढ़ा सकते हैं???**
- हम कैसे **पवित्रता को सिद्ध** करेंगे???

**चरण 1** उस ईश्वरीय स्वभाव में चलने के लिए जो हमारे भीतर है और सद्गुण बढ़ाने के लिए **रोमियों 6:6** हमें अच्छा उत्तर देता है :

**हम जानते हैं** कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। 7 क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा।

प्रभु की दृष्टि में — हमारा पुराना मनुष्यत्व मर गया है। हम उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए हैं।

- गलातियों 2:20 **मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ**, अब मैं जीवित न रहा, पर **मसीह** (उसका ईश्वरीय स्वभाव) **मुझ में जीवित है**; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस **विश्वास** से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और **मेरे लिये अपने आप को दे दिया।**

- मत्ती 16:24 यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने **आप का इनकार करे** और **अपना क्रूस उठाए**, और **मेरे पीछे हो ले।**

- **रोमियों 6:4** अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से **हम उसके साथ गाड़े गए**, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा **मरे हुओं में से जिलाया गया**, वैसे ही **हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।** यह लक्ष्य है।

**चरण 2** रोमियों 6:11 ऐसे ही **तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में** जीवित **समझो।**

- **समझो** -> यह यूनानी क्रिया आदेशात्मक भाव में है = **यह करो!** इस पर निर्भर रहो! इस निष्कर्ष को मानो! विश्वास करो! **इसे अपने जीवन में सच बनाओ!**

- परिणाम : पद 12 इसलिये **पाप तुम्हारे नश्वर शरीर में राज्य न करे**, कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो; 13 **और न** अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो

- जो कुछ भी आप करते हो और जानते हो कि वह सही या अच्छा नहीं है -> उसे पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से **बंद कर दें** और उसके स्थान पर यीशु के ईश्वरीय स्वभाव को स्थापित करें।

- फिलिप्पियों 4:13 जो **तुझे सामर्थ्य देता है उसमें तू सब कुछ कर सकता है।** उसका ईश्वरीय स्वभाव आप में है।

**चरण 3** रोमियों 6:13 **अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो**, और अपने अंगों को **धार्मिकता के हथियार होने के लिये** परमेश्वर को सौंपो। 14 तब तुम पर पाप की प्रभुता **न होगी।**

- रोमियों 12:1 इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि **अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र**, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।

- हर सुबह जब आपकी आँखें खुले तो यह कहें :
  "मैं अपनी देह को परमेश्वर के हाथों में एक जीवित बलिदान करके चढ़ाता हूँ जो उसके ईश्वरीय स्वभाव और सद्गुण से भरा हो। आपके मार्ग पर हम चलें.... आपका राज्य आए, आपकी इच्छा पूरी हो।" यह इतना ज़रूरी क्यों है?

- रोमियों 6:16 क्या तुम नहीं **जानते** कि **जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों के समान सौंप देते हो उसी के दास हो** : चाहे **पाप** के (उस दुष्ट को अपने ऊपर पर विपत्ति लाने की अनुमति देकर, इफिसियों 4:27), जिसका अन्त मृत्यु है, चाहे **आज्ञाकारिता के, जिसका अन्त धार्मिकता** अर्थात उसके ईश्वरीय स्वभाव और उसके **बहुमूल्य** एवं **बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाओं** की सब आशीषें हैं।

(4) भक्ति पर भाईचारे की **प्रीति**

- जिस चरम सीमा पर ईश्वरीय स्वभाव और सद्गुण आप में होंगे, **भाईचारे की प्रीति भी उतनी ही बहुतायत और भरपूरी से होगी।**

- रोमियों 2:4 **परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है** = मुड़ना और एक नई दिशा में जाना।

- गलातियों 5:22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, **कृपा**

- कुलुस्सियों 3:12 अतः परमेश्वर के उन चुने हुओं के सदृश जो पवित्र और प्रिय हैं, अपने हृदय में सहानुभूति, **करुणा**, दीनता, विनम्रता और सहनशीलता धारण करो। ईश्वरीय स्वभाव।

(5) भाईचारे की प्रीति पर **प्रेम** बढ़ाते जाओ। इस पृथ्वी पर सबसे बड़ी शक्ति "प्रेम" है।

- सर्वशक्तिमान परमेश्वर के ईश्वरीय स्वभाव से, जो स्वयं प्रेम है और आपको निर्देशित करता है, प्रेम आपके जीवन की नदी से बह निकलेगा और वह उन सब को जिनसे आप मिलते हैं छूकर बदल देगा।

- यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियाँ बोलूँ और **प्रेम** न रखूँ, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झाँझ हूँ। और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूँ, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूँ, और मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु **प्रेम** न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं। यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूँ, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। **प्रेम**

धीरजवन्त है, और कृपालु है; **प्रेम** डाह नहीं करता; **प्रेम** अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। 6कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। 8प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियाँ हों, तो समाप्त हो जाएँगी; भाषाएँ हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। 1 कुरिन्थियों 13:1-8

- 2 पतरस 1:8 क्योंकि यदि ये **गुण तुम में** बने रहें तथा **बढ़ते जाएं** तो हमारे प्रभु यीशु मसीह के **पूर्ण ज्ञान** में ये तुम्हें न तो **अयोग्य** और न **निष्फल** होने देंगे। 9 क्योंकि जिसमें ये गुण नहीं, वह अंधा है, अदूरदर्शी है। वह अपने पहिले के पापों से धुलकर शुद्ध होने को भूल बैठा है। 10 अतः हे भाइयो, अपने **बुलाए जाने** और **चुने जाने** की निश्चयता का और भी अधिक **प्रयत्न** करते जाओ, क्योंकि इन बातों के **प्रयत्न में** जब तक रहोगे, **तुम कभी ठोकर न खाओगे**, 11 और इसी प्रकार हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के अनन्त राज्य में **प्रवेश** के लिए तुम्हारा **बड़ा स्वागत** होगा।

## उसने हमें वह सब कुछ दिया है जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है :

## विश्वास/ बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञा/ उसका ईश्वरीय स्वभाव

## सद्गुण/ ज्ञान/ संयम

## धीरज/ भक्ति/ भाईचारे की प्रीति और प्रेम।

और किस बात की आपको ज़रूरत हो सकती है?

यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप क्या सबसे अधिक चाहते हैं।

अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, **उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है,** कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन। इफिसियों 3:20-21

---

# वे पद जो बताते हैं कि विश्वास परमेश्वर की ओर से दान है

गलातियों 3:23 पर **विश्वास के आने से पहले** व्यवस्था की अधीनता में हमारी रखवाली होती थी, और उस **विश्वास के आने तक जो प्रगट होनेवाला था**, हम उसी के बन्धन में रहे। विश्वास हमारे पास आया।
वह हमारे भीतर से या हमारे द्वारा उत्पन्न नहीं हुआ।

रोमियों 12:3-4 **मैं तुम में से हर एक से कहता हूँ कि ... परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है**
वह विश्वासियों से बात कर रहा है। पद 1 को देखें **भाइयो**

फिलिप्पियों 1:29 क्योंकि मसीह के कारण **तुम पर यह अनुग्रह हुआ** कि **न केवल उस पर विश्वास करो** पर उसके लिये दु:ख भी उठाओ

प्रेरितों के काम 3:16 और **उसी** के नाम ने, **उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है**, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ्य दी है। उसी **विश्वास ने जो *उसके द्वारा है**, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है।

*यूनानी (δι') डीया; एक महत्वपूर्ण पूर्वसर्ग है जो क्रिया के माध्यम को दर्शाता है। विश्वास हमारे पास यीशु के द्वारा आता है। विश्वास उससे आरम्भ होता है और हमें दिया जाता है।

1 पतरस 1:21 ***उसके द्वारा तुम उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो** ... कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो।
(*द्वारा या माध्यम से—क्रिया का माध्यम)

यूहन्ना 3:27 जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न **दिया जाए**, तब तक वह **कुछ नहीं पा सकता।**

इफिसियों 2:8 क्योंकि **विश्वास** के द्वारा **अनुग्रह** **(परमेश्वर का मुफ्त दान)** ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है,

- यह इस बात को स्पष्ट करता है कि **उद्धार हमारी ओर नहीं है।** अतः **विश्वास भी हमारी "ओर से" नहीं हो सकता** क्योंकि उद्धार विश्वास के द्वारा या उसके माध्यम से आता है। नहीं तो उद्धार हमारे ऊपर निर्भर होता।

- और इस बात को स्पष्ट करने के लिए, पवित्र आत्मा ने यह भी कहा "और **यह** तुम्हारी ओर से नहीं," जो स्पष्ट रूप से **उस संज्ञा की ओर संकेत करता है जो उससे पहले है** अर्थात "**विश्वास**" जो हमारी ओर से **नहीं** परन्तु **"परमेश्वर का दान"** है।

रोमियों 4:16-17 इसी कारण प्रतिज्ञा **विश्वास पर** आधारित है **कि अनुग्रह की रीति पर** हो [यदि विश्वास हमारे भीतर से उत्पन्न होता, तो वह अनुग्रह की रीति पर नहीं होता---> मुफ्त दान], कि **वह** उसके सब **वंशजों** [अक्षरशः बीज। हम परमेश्वर के चुने हुए वंश से हैं] के लिये दृढ़ हो, न कि केवल उसके लिये जो व्यवस्थावाला है वरन् उनके लिये भी जो अब्राहम के समान विश्वासवाले हैं; वही तो हम सब **का** पिता है।

प्रेरितों के काम 16:14-15 लुदिया नामक ... एक भक्त स्त्री सुन रही थी। प्रभु ने **उसका मन खोला** कि वह पौलुस की बातों पर चित्त लगाए।

2 थिस्सलुनीकियों 3:2 और हम टेढ़े और दुष्ट मनुष्यों से बचे रहें क्योंकि **हर एक में विश्वास नहीं।**

2 थिस्सलुनीकियों 2:13 ... क्योंकि परमेश्वर ने आरम्भ ही से तुम्हें **चुन लिया** है कि (दो बातें) (1) आत्मा के द्वारा पवित्र बन कर और (2) सत्य पर **विश्वास** करके **उद्धार पाओ**

- पवित्र किया जाना आत्मा के द्वारा होता है। शब्द "और" पवित्र किए जाने और विश्वास करने को आपस में जोड़ता है जिसका अर्थ है कि **विश्वास भी आत्मा के द्वारा ही है, मनुष्य के द्वारा नहीं।**

याकूब 2:5 हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो। क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं **चुना** कि **विश्वास में धनी** और उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उस ने उनसे की है जो उससे प्रेम रखते हैं?

1 कुरिन्थियों 1:30 परन्तु **उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो**, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।